अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्तूबर - दिसंबर 2024

थारू जनजाति की सांस्कृतिक स्थिति: संगीत के विशेष संदर्भ में

डॉ. सचिन रस्तोगी

असिस्टेंट प्रोफेसर– राजनीति विज्ञान विभाग, एम0 बी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्द्वानी उत्तराखण्ड

जनजातियाँ समाज की सबसे उपेक्षित वर्ग है, जो हमेशा से सामाजिक भेदभाव तथा आर्थिक शोषण का शिकार बनती रही है। इन्हीं जनजातियों में से एक है उत्तराखण्ड राज्य की थारू जनजाति। इन थारू जनजातियों पर प्रकृति और ईश्वर की अद्भुत कृपा है। एक विद्धान ने तो थारूओं की वनाच्छादित निवास भूमि को 'प्राकृत सौन्दर्य का खान' ही कह दिया है।

उत्तराखण्ड के पहाड़ एवं तराई में स्थित अपनी शानदार ऐतिहासिक धरोहर की शोहरत और शान से युक्त थारूओं की 'सब्ज–शदाब सरजमी अनोखरी निराली कशिश् की कर्मज रही है।' जीवनधरा की आवश्यक सामग्रियों की चिन्ता से मुक्त यह जाति बचे हुए समय को नृत्य–गीत तथा वादन में व्यतीत करती है। इनके गीतों में इनके देश एवं समाज का दुःख, मान–अपमान, शगुन–अपशगुन आदि का सजीव चित्रण मिलता है। थारूओं का संगीतमय जीवन बड़ा ही रसीला और रमणीय है।

थारूओं के गीतों में सैकडों प्रकार की धुन है जिसे समय–समय पर प्रयोग में लाया जाता है। थारू गीतों की ध्वनियों में व्याप्त उतार–चढ़ाव सुनने से ऐसा प्रतीत होता है कि इनके अधिकांश गीतों का स्वर समुदाय, राग दरबारी संगीत के समान है। न्यास–विन्यास आदि विध्न भी इनके गीतों में स्पष्ट झलकता है। निःसन्देह थारू लोकगीत विश्व में एक स्वतंत्र स्थान रखते है।

थारू गीतों के समूह को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है–

प्रथम– वाद्य रहित सामूहिक गान।
द्वितीय – वाद्य रहित व्यक्तिगत गान।
तृतीय– वाद्य युक्त सामूहिक गान।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्तूबर - दिसंबर 2024

प्रथम वर्ग– वाद्य रहित सामूहिक गायन शैलियों में देव अराधना, सगुनी, कुमरावल, कुमरावन, परिछावन, कन्यादान, कोहबर, सम्दावन, गाली गान आदि को विभिन्न गीत होते हैं, जिन्हें शादी के अवसर पर गाया जाता है। इन गीतों को महिलाऐं सामूहिक रूप से गाती हैं। इनमें किसी भी वाद्य का प्रयोग नहीं किया जाता है। फिर भी ये गीत ताल मात्राओं से भरे रहते हैं।
द्वितीय वर्ग– वाद्य रहित व्यक्तिगत गायन प्रणाली में लगनी, विरहनी, तेलमान गीत, निनियां गीत, प्रभाती आदि अनेक गीत गाये जाने का प्रचलन है। इनके गायन में किसी तरह का वाद्ययंत्र प्रयोग नहीं किया जाता है। फिर भी गाये जाते समय ये गीत ताल मात्राओं से ओत–प्रोत प्रतीत होते हैं।

तृतीय वर्ग– वाद्ययुक्त सामूहिक गीत नृत्यों में ही गाये जाते हैं। नृत्यों से पूर्वी तथा झूमर आदि नृत्य का काफी प्रचलन है। इनमें गीतों की प्रधानता होती है। नर्तक या नर्तकी अपने अंग–प्रत्येगों के प्रदर्शन के माध्यम से गीतों के भाव को सजीव व्यक्त करने का प्रयास करते हैं। वाद्य में मृदंग, मानर और झांझ आदि के प्रयोग की प्रमुखता है। महेष्ठामान, चंचली,रास,लटास,विलापद्ध,विभास तथा झुमर आदि कई गीत इस गायन शैली में गाये जाते है। इनमें कई तालों का प्रयोग होता है। परन्तु प्रायः रूपक तथा चॉचर आदि तालों के जैसे ताल इनके गायन में प्रयुक्त होते हैं।

स्वर– इनमें स्वर ज्ञान के अभाव के बावजूद इनके गले की ध्वनियाँ श्रृतियों में विचरती हैं। शु–स्वरों के अलावा विकृत गान्धर एवं निषाध्य का प्रयोग इन गीतों में स्पष्ट झलकता है। कुछ गीतों में तीव्र मध्यम का भी उपयोग सुनने को मिलता है। इनके समस्त गीतों के स्वर मुख्यतः समुदाय कल्याण,विलावल,खम्भराज आदि घाटों में केन्द्रित होते हैं।

लय– गीत सामान्यतः मध्यम लय में ही गाये जाते हैं। प्रायः गीत का लय थोड़ा धीमा होता है। परिणामस्वरूप ख्याल और ध्रुवपद आदि की तरह गंभीरता की झलक इनमें पड़ती है।

ताल– उठाव, ग्रहस्वरद्ध, चढ़ाव, आरोहद्ध, उतार, अवरोहद्ध तथा ठहराव, न्यास–विन्यासदिद्ध इत्यादि इनके गीतों में स्वभावतः पिरोए जाते हैं। स्वर ताल तथा मात्राओं में अनभिज्ञ होते हुऐ भी थारू गायक अपनी सांस्कृतिक धरोहर के फलस्वरूप संगीत के नियमो का अपने आप पालन करते हैं।

समय– संगीत में समय का काफी महत्य होता है, कौन राग कब गाया जाएगा यह संगीत में काफी महत्वपूर्ण विषय है। थारू गीत में भी शाब्दिक विवरण के अनुसार गायक के समय और मौसम की प्रथा कायम है। कुछ गीत धुन तर्जद्ध के आचार से रात्रि तथा चतुर्थपहर रात्रि में गाए जाते हैं। परन्तु आश्चर्य है कि इन गीतों के धुन में समय को इंगित करने वाले किस प्रकार के चिन्ह नहीं दिखते। फिर भी ये गीत स्वयं समय और

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्तूबर - दिसंबर 2024

मौसम के अनुरूप ढ़ल जाते हैं और गायक विशेष समय या मौसम के उपयुक्त गीत का ही रास वातावरण में घोलने के लिए प्रवृत्त होते हैं।

थारू गीतों पर बौ वज्रयान सम्प्रदाय का प्रभाव पाया जाता है। धमी लोकनिक चक्कर पूजा, लोकनिक रामांसा, देवी–देवता के चमत्कार ,नदी–नाला, वृक्ष व पक्षी का मातृवत प्रेम, ईष्र्या, मिलन और विरह, त्रिपुर, दंतकाली, महाकाली, इन्द्रकाली, वामती, वाणमतीद्ध, गहील और नामेर आदि की स्तुति, पूजा गीत, लोथभूत, रकत, भूत और गरी, ग्रहद्ध भूत आदि के आतंक के शमन, राम रणपाल, गुगाली कुँअर, राजा ध्नपाल, राजा भीमसेन आदि के शौर्य गाथा, बधेसरी, लुशेसरी, जलकुमारी आदि के प्रणयगीत में थारू गीतों के मुख्य विषयवस्तु होते हैं जो बौ (वज्रयायन के प्रभाव के स्पष्ट प्रमाण) हैं।
उत्तराखण्ड के थारू लोक गीतों में विद्यापति, उमापति, नन्दीपति, सरसराम, कृष्णदास आदि के उल्लेख मिलते हैं। कबीर का भी प्रभाव थारू लोकगीतों में पाया जाता है। एक तरफ थारू लोकगीतों में वैष्णव, शैव, शाक्त एवं निर्गुण सन्त परम्पराद्ध के तत्व पाये जाते हैं। थारू जाति में हर माह में गाने के लिए अलग–अलग गीत गाये जाते हैं। वैशाख जेठ में विरह गीत, आषाढ़, श्रावण, भादों में वर्षाती गीत गाये जाते हैं। वर्षाती गीतों में हरी बारहमासा , पहु बारहमासा, जगरनथिया बारहमासा, दादुल बारहमासा, मैना बारहमासा, बेली बारहमासा, निर्गुण बारहमासा आदि विभिन्न प्रकार के गीतों का प्रचलन है। अश्विन–कार्तिक में चॉचर, देवी गीत, देव गीत तथा अग्रहण पूस और माघ में बराती गीत गाये जाते हैं। थारू समाज ने सिन्ध विवाह के वक्त विवाह गीत, मास के सामागीत और दशहरा में देव–देवी के गीत गाये जाते हैं।

विरहनी– थारूओं में अनेक प्रकार के गीत हैं। परन्तु इनका सर्वोत्कृष्ट एवं सर्वप्रिय गीत विरहनी माना जाता है। यह गीत पुरूषों द्वारा ही गाया जातय है। इसकी विषयवस्तु स्त्री–पुरूष, विरह–वियोग के इर्द–गिर्दही घुमती रहती है। विरहनी के बारे में प्रचलित है कि प्रथाओं का अपना गीत विरही है जिसे हलवाहे हल चलाते समय गाते हैं। एक हलवाला गीत गाता है और उसके साथी हलवाहे कुर की आवाज से उसमें स्वर भरते हैं। वस्तुतः विरह वर्णन के आधिक के कारण ही इस कोटि के गीतों का ना 'विरहनी' पड़ा। निःसंन्देह विरहनी एक ऐसा दर्पण है, जिसमें हमें थारूओं की भाषा, संस्कृति, सामाजिक स्थिति, सुख–दुःख, हास्य, दर्शन, आशा–निराशा, उनके देश आदि की स्पष्ट झांकी मिलती है।

पराती– विरहणी के समान पराती भी एक प्रकार से विरह वेदना का गीत कहा जा सकता है यह वाद्यहीन होता है। इसे कार्तिक मास में भोर होने से पहले हल जलाते समय हलवाहो द्वारा गाया जाता है। पराती गीत के लयों में काफी उतार–चढ़ाव होता है। हल जोतते समय के अलावा थारू लोग अगहन–माघ माहों में विछावन पर या अंगीठी के पास बैठकर भी पराती गाते हैं। पराती गायन की प्रथा धान पकने और कुटने के समय जाड़े में भी है। पराती गीतों में विरह के अलावा भजन का भी पुट होता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्तूबर - दिसंबर 2024

बारहमासा– बारहमासा गीत भी थारू संस्कृति का अभिन्न अंग है। यह वास्तव में भक्ति गान है और मुख्यतः वैष्णव परम्परा से जुड़ा हुआ है। थारू समाज कई धार्मिक विचारधाराओं से ओतप्रोत है। इनके रीति–रिवाजों गीतों एवं पर्वों में इनके विभिन्न विचारधाराओं की झलक मिलती है। बारहमासा गीतों में वैष्णव भक्ति–भाव समाहित हैं।

बारहमासा पूरे वर्ष गाया जाता है, परन्तु इनके कई रूप, कई विषयवस्तु एवं कई रस हैं। राम बारहमासा चैत माह में शुरू होता है। इसमें राम की अर्चना के भाव पाए जाते हैं। सावनी बारहमासा सावन में गाए जाते हैं। इनमें कृष्ण की लीलाओं का चित्रण मिलता है। साथ–साथ इसमें लौकिक श्रृंगाररस के प्रकरण भी रहते हैं।

सांची बारहमासा, ज्ञान–बारहमासा, उद्यो बारहमासा, बेनीमाध्व जी का बारहमासा, रूक्मिणी बारहमासा, उदासी बारहमासा जैसे अनेक बारहमासा गीत विरह के गीत माने जाते हैं। इन विरह बारहमासा गीतों में भक्ति भाव से युक्त पौराणिक गाथाओं का ही मुख्य चित्रण रहता है। इनके गायन में किसी वाद्य का उपयोग नहीं किया जाता है। लक्ष्मण बारहामासा भी थारूओं का काफी प्रिय गीत है इसे बरसात के समय ही ज्यादा गाया जाता है। इसमें संस्कृत का प्रयोग ज्यादा पाया जाता है। यह मूलतः भक्ति गान है।

झूलन बारहमासा सावन–भादो मे गाया जाने वाला रास लीला गीत है। यह मूलतः श्रृगार गीत है जिसमें भक्ति, विरह, वेदना का समुचित समावेश रहता है।

पचरा– पचरा मुख्यतः दशहरा के समय गाया जाता है। यह देवी याचना का गीत है। इसे थारू गुरू या धामी गाते हैं। यह भी वास्तव में भक्ति गीत होता है। यह तंत्रा–मंत्रा साधकों द्वारा ही देवी के आह्वान के लिए बड़े ही मधुर लय में गाया जाता है। इन गीतों में विस्मय, प्रहसन और भ्ययुक्त भक्ति की झलक स्पष्ट दिखती है। पचरा गायन में जो एकाग्रता या तन्मयता देखने को मिलती है। वह बहुत थारू गीतों में पायी जाती है। उत्तराखण्ड के थाय इसे चाॅचर कहते हैं। इसे गुरू लोग भूतप्रेत का ओझइती करते हुए भी गाते हैं।

जतसारी– बसंत ऋतु में सूर्यास्त के पहले थारू लोग जतसारी गीत गाते हैं। यह मुख्यतः श्रंृगार रस का गीत है। थारू लोग सूर्य डूबने से पहले ही तबला, जोड़ी, सारंगी आदि वाद्ययंत्रों की मधुर धुनों पर जतसारी गीत के रसों को बिखेरना शुरू कर देते हैं।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्तूबर - दिसंबर 2024

चउताल– यह होली के समय गाया जाता है। यह काफी उत्साह और आमोद–प्रमोद का गीत है। इसमें भक्ति और श्रृंगार का मिश्रण होता है। थारू गायक इसे सामूहिक रूप से झाल–झीलीम वाद्ययंत्रों से उत्पन्न ताल तरंगों के साथ गाते हैं।

चहका– चहका शब्द के भाव से ही चहकने वाला गीत प्रतीत होता है। यह भी होली के समय ही गाया जाता है। होली गीतों के कई प्रकार होते हैं। चहका पूर्णतः आनन्द विहार का गीत है। यह गाली, हँसी और मजाक से लबालब होता है। इसके गायक के समय झाल,झीलीम और डमरू बजाया जाता है।

वहपट– यह भी होली गीत है। इसमें भक्ति और श्रृंगार का मिश्रण पाया जाता है। इसमें भी झील–झीलीम और डमरू बजाया जाता है।

चैता– यह होली के खत्म होने का संकेत देता है इसे चैत शुरू होते ही गाया जाता है। रंग खेलने के साथ ही इसका गायन प्रारम्भ हो जाता है। इसमें श्रृंगार और विरह दोनों का मजेदार मिश्रण सुनने को मिलता है।

चेती– इसे चैत मास में गाया जाता है। इसमें लवन्डा साड़ी पहनकर तबला, जोड़ी आदि के धुन पर गाता है। यह पूर्णतः श्रृंगार रस का गाना है।

वृजहोरी– यह भी भक्ति और श्रृंगार रस से परिपूर्ण होली गीत है। यह काफी रसदार होता है। इसे पूरे फल्गुन माह गाया जाता है।

झूलन– यह कृष्ण भक्ति पर आधारित गीत है। इसे सावन, भादो तथा कार्तिक मासों में गाया जाता है। यह भी काफी उल्लास का गीत है इसमें गायक, तबला, सारंगी, जोड़ी, दन्ततात, मजीरा आदि वाद्ययंत्रों को बजाते हैं।

कजरी– वर्षा ऋतु में रोपनी के कार्य से मुक्त होकर थारू पुरूष सामूहिक रूप से कजरी गाते हैं। कजरी के प्रत्येक शब्द अपने में श्रृंगार और रागम रंग पिरोए होते हैं। इसमें भी तबला, सारंगी, जोड़ी आदि वाद्ययंत्र बजाये जाते हैं।

विगहरा– भक्ति और श्रृंगार से ओत–प्रोत रविगहरा गीत रात्रि के दो बजे के आस–पास गाया जाता है। इसका गायन सालों भर चलता है। इसमें मुख्यतः कृष्ण की रास–लीलाओं का चित्रण होता है। यह एकल गीत है। इसमें किसी भी वाद्ययंत्रों का प्रयोग नहीं होता है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्तूबर - दिसंबर 2024

भैरवी– इसे माध में सूर्योदय के पहले जब आकाश में कुछ–कुछ लालिमा की आभा महसूस होने लगती है, तब से गाया जाता है। इसमें किसी प्रकार के वाद्ययंत्रों का उपयोग नहीं किया जात है। यह भी एकल गीत ही है। भैरवी निःसन्देह एम तरह का भजन ही है जिसमें भगवान कृष्ण की महिमा का बखान होता है।

निर्गुण– निर्गुण कबीर के दोहों पर आधारित भजन होता है। इसे (रात्रि के समय ही, परन्तु सालभर गाया जाता है। इसमें अध्यात्म तथा छायावाद का पुट होता है) ।

देवताई– इसे दशहरा में गाया जाता है। यह देवी का गीत है। इसे मुख्यतः गुरूधमी भूतप्रेत, चुंडैल आदि के झाड़–फूक की प्रक्रिया में गाते हैं। दशहरा के अलावा अन्य समय में भी इसे झाड़–फूँक की प्रक्रिया में गाया जाता है। इसके गायन के साथ मानर एक तरह का ढोलक झाल तथा मृदंग भी बजाया जाता है।

धुनपूर्बी– यह पूर्णतः श्रृंगार रस का गीत है। इसे सालभर दिन हो या रात ग्यारह–बारह बजे के करीब गाया जाता है।

रासगीत– यह कृष्ण भक्ति का गीत है। परन्तु इसमें रंगराग का अंश ज्यादा रहता है। इसे भी पूरे साल गाया जाता है। इसके गायन का समय शाम के सात–आठ बजे होता है।

भीरकुटी– यह भी कृष्ण भक्ति है। इसे मात्र भादो माह में कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर महिलाऐं गाती हैं। यह वास्तव में बच्चे के जन्म संस्कार का गीत है जिसे थारू समाज भक्ति की चादर ओढकर भगवान कृष्ण के जन्मोत्सव पर्व पर गाकर अपना हर्ष व्यक्त करती है। थारू बालाऐं एवं प्रौढ़ सैकड़ों प्रकार के विवाह गीत है। इन विवाह गीतों में मुख्य है– सन्दावन, रामनहदु, कोहबर , सम्पती, सिखाटन आदि।

सन्दावन वियोग– सन्दावन वियोग गीत है। लड़का जब शादी करने के लिए बारात लेकर चला जाता है तो उसके परिवार की महिलाऐं सन्दावन गीत गाती है। ठीक उसी तरह जब लडकी विदा होकर अपने ससुराल जाने लगती है तब उसके मायके की औरतें इसे गाती हैं।

रामनहदु– रामनहदु लड़का लड़की की शादी के पहले नख काटने तथा स्नान कराने के समय गाया जाता है। यह मंगल कामना गीत है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्तूबर - दिसंबर 2024

कोहबार विवाह– कोहबर विवाह गीत के साथ–साथ आनन्द उल्लास का भी गीत है। विवाह के समय जब लड़का–लड़की को पूजा घर में देव पूजन तथा आपसी मिलन के लिये ले जाया जाता है तब कोहबर गीत का गायन होता है। औरतें इसे अन्य समय भी गाती हैं।

सम्पती सिखाटन– सम्पती सिखाटन भी विवाह गीत है जिसे मात्र औरतें ही गाती हैं। इसे रोपनी में भी गाया जाता है। थारू महिलाऐं चैत माह में घाटों में पूजा पर्व के समय चइतावर या घाटों का भी गाना गाती हैं। इस गाने में भक्ति भाव के अतिरिक्त बसन्त की भी झोंकी दिखती है।

थारू जनजाति के सांस्कृतिक जीवन में गीत–संगीत का व्यापक महत्व है और इसके माध्यम से ही वे अपने हृदय की आन्तरिक प्यास को बुझाते हैं। सभी दृतियों और सारे सामाजिक, धार्मिक अनुष्ठानों के लिए गीत–संगीत का प्रचलन है। धार्मिक त्योहारों और शादी के अवसरों पर रात–दिन गीत गाते बजते रहते हैं।

ये गीत इनकी भूमि की उपज है। स्थानीय रंग इनके जीवन के गान हैं। इसमें विराय शब्द लय,धुन,ताल एवं संदर्भ थारूओं के अनुभवों भावनाओं और निरन्तर संघर्ष के स्पंदन के जीवन्त प्रतिबिम्ब होते हैं। ये थारूओं के वास्तविक जीवन के सही चित्रण होते हैं। एक तरफ थारू लोकगीतों में वैष्णव,शौव,शाक्त एवं निर्गुण, सन्त परम्परा के तत्व पाए जाते हैं, तो दूसरी तरफ वज्रयानी, (नाथ और काल–कापलिक के तत्व भी पाये जाते हैं। इनके गीतों में संगीत की सभी विशेषताऐं कूट–कूट कर भरी रहती है।

लेकिन, थारू समाज में गीत–नृत्य को सिखाने के लिए किसी भी प्रकार की औपचारिक व्यवस्था नहीं है। इस सम्बन्ध में किसी भी नियमित शिक्षा की व्यवस्था नहीं है। इसके कारण थारू नर–नारियों का संगीत का सही ज्ञान नहीं है। उन्हेंइस बात का ज्ञान नहीं रहता है कि वे गीत को किस राग में गा रहे हैं। भौरवी, भमपलासी, केदार, मालकोश, जौनपुरी, मल्हार, माखा, पूर्वी, दुर्गा आदि। वे किस ताल में गा रहे हैं?

तीनताल, एकताल, झपताल, रूपकताल, झूमड़ा या फिर आड़ा चार ताल आदि। वे बड़ा ख्योल गा रहे हैं या छोटा या फिर धुरवद। वे कहाँ–कहाँ विकृत स्वर लगा रहे हैं कहाँ और कहाँ कोमल। किस लय में गा रहे हैं तीब्र या मध्यम। इस प्रकार संगीत की अनेक जटिलतायें हैं, जिससे थारू समाज पूर्णतः अनभिज्ञ है।

फिर भी थारू नर–नारी क्या सही है और क्या गलत। क्या (है और क्या विकृत ।इन सब चिन्ताओं से मुक्त होकर जब वे प्रकृति की गोद में बैठकर मस्त होकर स्वर लगाते होंगे, तबवह स्वर ईश्वर तक जरूर पहुँचा होगा। ऐसी हमारी कामना है।

अमृत काल
अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञ समीक्षित एवं स्वीकृत शोध पत्रिका
ISSN: 3048-5118, खंड 2, अंक 4, अक्तूबर - दिसंबर 2024

संदर्भ सूची

[1]. प्रभु नारायण चैधरी, थारू जनजाति का रीति–रिवाज, निर्णय मासिक,2/1,नेपाल, पृ0-6
[2]. राहुल सांस्कृत्यायन, पुरातत्व निबन्धवली, दूसरा संस्करण, किताब महल,इलाहाबाद, 1985, पृ0- 04
[3]. ईश्वर बराल, थारू जाति व तिनको संस्कृति, नेपाल सांस्कृतिक परिषद् पत्रिका, 1/1, बैशाख्, 2004, नेपाल।
[4]. उपरोक्त।
[5]. रामानन्द प्रसाद सिंह, द रियल स्टोरी ऑफ द थारू, इन्दु प्रेस, ललितपुर, नेपाल, पृ0-84
[6]. एल0आर0 सिंह, द तराई रीजन आॅफ यू0पी0-ए स्टडी इन ह्यूमन इकोलॉजी, एन0जी0आई0 खण्ड–2, 1956.
[7]. उपरोक्त 6- प्रो0 चतुर्भुज मेमोरिया,मानव भूगोल, पृ0-426-427.
[8]. हृदय नारायण चैधरी, थारू जाति और समय, बकुलिया,भवानीपुर, बाटा नेपाल पृ0-37.
[9]. रामानन्द प्रसाद सिंह, द रियल स्टोरी ऑफ द थारू, इन्दु प्रेस, ललितपुर,नेपाल, पृ0-04
[10]. उपरोक्त।